

तुम सुमरत स्वयमेव ही, बन्धन सब खुल जाहिं ।  
 छिनमें ते संपति लहैं, चिंता भय विनसाहिं ॥४६॥  
 महामत्त गजराज और मृगराज दवानल ।  
 फणपति रण परचंड नीर-निधि रोग महाबल ॥  
 बन्धन ये भय आठ डरपकर मानों नाशै ।  
 तुम सुमरत छिनमाहिं अभय थानक परकाशै ॥  
 इस अपार संसार में, शरन नाहिं प्रभु कोय ।  
 यातैं तुम पद-भक्त को, भक्ति सहाई होय ॥४७॥  
 यह गुनमाल विशाल नाथ तुम गुनन सँवारी ।  
 विविध-वर्णमय-पुहुप गूँथ मैं भक्ति विथारी ॥  
 जे नर पहिरे कंठ भावना मन में भावैं ।  
 'मानतुंग' ते निजाधीन-शिव-लछमी पावैं ॥  
 भाषा भक्तामर कियो, 'हेमराज' हित हेत ।  
 जे नर पढ़ैं सुभावसों, ते पावैं शिव-खेत ॥४८॥

(दोहा)

\*\*\*\*

दया दान पूजा शील पूँजी सों अजानपने,  
 जितनी ही तू अनादि काल में कमायगो ।  
 तेरे बिन विवेक की कमाई न रहे हाथ,  
 भेद-ज्ञान बिना एक समय में गमायगो ॥  
 अमल अखंडित स्वरूप शुद्ध चिदानन्द,  
 याके वणिज माहिं एक समय जो रमायगो ।  
 मेरी समझ मान जीव अपने प्रताप आप,  
 एक समय की कमाई तू अनन्त काल खायगो ॥